Gl – मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं मती ८:१९-२२
और लूका ९:५७-६२ | 1

– Save This Page as a PDF–

मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं

मती ८:१९-२२ और लूका ९:५७-६२

खुदाई: यीशु और उनके प्रेरित कहाँ यात्रा कर रहे थे? क्यों? प्रभु इन संभावित अनुयायियों द्वारा पेश किए गए बहानों पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं? उनकी प्रतिक्रियाएँ हमें शिष्यत्व के बारे में क्या सिखाती हैं? आपके अपने शब्दों में, मसीह के प्रत्येक कथन का क्या अर्थ है? उसका अभिप्राय क्या है?

चिंतन: मेशियाच का पालन करने की लागत के बारे में आपको सबसे पहले कैसे पता चला? अब आप वह तनाव कहां महसूस करते हैं? यदि वह आपसे कहे: आज मेरे पीछे आओ, और आप चीजों को टालने के लिए अपने पसंदीदा बहानों में से एक का उपयोग करें, तो क्या होगा?

पेरिया में जॉर्डन नदी पार करने के बाद यीशु सड़क पर चल रहे थे और यरूशलेम की ओर जाते समय उनकी मुलाकात कई “अनौपचारिक शिष्यों” से हुई। येशुआ जानता था कि मानव स्वभाव चंचल, अस्थिर और आत्म-केंद्रित है। बहुत से लोग उत्साह, ग्लैमर या व्यक्तिगत लाभ की आशा से उसकी ओर आकर्षित होते हैं। जब चीजें अच्छी चल रही होती हैं तो वे जल्दबाजी में कूद पड़ते हैं, लेकिन जैसे ही कारण अलोकप्रिय हो जाता है या बलिदान की मांग होती है तो वे कूदकर अपनी एड़ियां तोड़ देते हैं। पहले तो वे ऐसे दिखते हैं जैसे वे मसीहा के लिए जीवित हैं और अक्सर शानदार गवाही देते हैं, लेकिन जब उनके साथ उनके जुड़ाव की कीमत उनके सौदे से अधिक होने लगती है, तो वे रुचि खो देते हैं और फिर कभी स्थानीय चर्च या मसीहाई आराधनालय में नहीं देखे जाते हैं। जैसा कि बाइबल टिप्पणीकार आर. सी. एच. लेन्स्की कहते हैं, ऐसा व्यक्ति “परेड में सैनिकों, बढ़िया वर्दी और चमचमाते हथियारों को देखता है और थका देने वाले मार्च, खूनी लड़ाइयों और कब्रों को भूलकर, जो शायद अचिह्नित हैं, शामिल होने के लिए उत्सुक होता है।”

यीशु ने कहा था कि उसका जूआ आसान था और उसका बोझ हल्का था (देखें Ee– मेरे पास आओ, जो थके हुए हैं, और बोझ से दबे हुए हैं और मैं तुम्हें आराम दूंगा); हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं था कि मसीह ने उन लोगों से हल्की माँगें कीं जो उसके शिष्य होंगे। उसका जूआ आसान था क्योंकि उसने स्वयं हमारे पापों को अपने शरीर पर क्रूस पर ले लिया, ताकि हम पापों के लिए मर सकें और धार्मिकता के लिए जी सकें; उसके घावों से हम चंगे हो गए हैं (१ पतरस २:२४)। यहां, हमारे पास एक तस्वीर है कि मसीहा की मांगें उन लोगों के लिए कितनी कठोर हैं जो उसका अनुसरण करेंगे।

हम शिष्यत्व के तीन स्तर पहले ही देख चुके हैं। सबसे पहले, हमें स्वयं को नकारना होगा; दूसरी बात, हमें अपना क्रूस उठाना होगा; और तीसरा, हमें अच्छे चरवाहे का अनुसरण करना चाहिए। यहां इन तीनों का विस्तार से वर्णन किया गया है। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि प्रेरित भी शिष्य थे, लेकिन सभी शिष्य प्रेरित नहीं थे।

सबसे पहले, आपको शिष्य बनने से पहले लागतों की गणना करनी चाहिए। एक टोरा-शिक्षक उसके पास आया और कहा: शिक्षक, आप जहां भी जाएंगे, मैं आपके साथ होऊंगा (मती ८:१९; लूका ९:५७)। अधिकांश टोरा-शिक्षकों के विपरीत, यह, सतही तौर पर, कम से कम क्षण भर के लिए प्रभु को स्वीकृत प्रतीत होता था। टोरा-शिक्षक जो शिष्य भी थे, उनका उल्लेख मती १३:५२, २३:३४ में भी किया गया है। लेकिन येशुआ के समय के वकीलों के हर दूसरे संदर्भ में ये उल्लेखनीय अपवाद थे। हालाँकि, इतने उच्च सम्मान में रखे जाने पर भी, ईसा मसीह अपने अनुयायियों को कुछ महंगे बलिदानों के लिए बुला रहे थे जिन्हें करने के लिए बहुत से लोग तैयार नहीं थे।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि टोरा-शिक्षक को लगा कि वह
मसीहा का अनुसरण करने के लिए स्वेच्छा से एक उच्च कीमत चुका रहा है और पहले से ही एक मुंशी होने के बाद शिष्यत्व की प्रक्रिया से गुजरना एक विनम्र और समय लेने वाला अनुभव होगा। हालाँकि, यीशु अपने भावी शिष्य को चेतावनी देते हैं कि ऐसा बलिदान भी अपर्याप्त साबित होगा जब उन्होंने कहा: यदि कोई मेरे पीछे आएगा, तो उन्हें पहले खुद से इनकार करना होगा (लूका ९:२३ए)। यहां कोई इनकार नहीं है; वह बहुत जल्दबाज़ था। गुरु ने उत्तर दिया: लोमड़ियों के मांद और पक्षियों के घोंसले होते हैं, परन्तु मनुष्य के पुत्र के पास सिर छिपाने की भी जगह नहीं है (मत्ती ८:२०; लूका ९:४८)। मती में मनुष्य का पुत्र वाक्यांश का पहला उपयोग अरामी वाक्यांश, एक इंसान के शाब्दिक अर्थ को असामान्य महत्व देता है। यहां जोर सोने के लिए एक नरम जगह के नुकसान के बारे में कम है, और त्ज़ियॉन में उनकी अंतिम अस्वीकृति के बारे में अधिक है।

दूसरी बात, एक बार जब आप प्रतिबद्ध हो जाएं तो देर न करें। एक अन्य संभावित भर्तीकर्ता से, मसीह ने कहा: मेरे पीछे आओ। परन्तु उस आदमी ने उत्तर दिया: हे

प्रभु, पहले मुझे जाने दे और अपने पिता को गाड़ने दे (मत्तीयाहु ८:२१; लूका ९:५९)। इसके कई मायने हो सकते हैं। सबसे पहले, यह संभव था कि उसके पिता अभी मरे नहीं थे। यहाँ यीशु की अत्यधिक कठोर होने के कारण आलोचना की गई है। लेकिन बात यह है कि पिता अभी मरे भी नहीं हैं! रब्बी सिखाते हैं कि पहले जन्मे बेटे (यह आदमी पहले जन्मे बेटे जैसा लगता है) को पिता के मरने तक उसके साथ रहना होगा। उनकी मृत्यु के बाद, बेटे को एक साल तक रहना था और उसके लिए विशेष कद्दीश प्रार्थना करनी थी, और उसके बाद ही बेटा जहां चाहे वहां जाने के लिए स्वतंत्र था।

इसके बाद, दूसरे मंदिर की अवधि के दौरान जिसमें यीशु ने सेवा की थी, एक पारंपरिक यहूदी के लिए दो दफ़नाने थे। पहला दफ़न मृत्यु के तुरंत बाद किया जाता था, उस समय शरीर को ठीक से तैयार किया जाता था और फिर एक गुफा या कब्र में दफ़नाने के स्थान पर रख दिया जाता था। दूसरा दफ़नाना एक साल के शोक की अवधि के बाद होगा, जिसमें मृतक की हड्डियों को एक विशेष दफ़नाने वाले बक्से में रखा जाता था जिसे अस्थि-कलश कहा जाता था। यहूदी धर्म में आज भी एक समानांतर प्रथा चलन में है। दिवंगत प्रियजन के निकटतम परिवार को एक वर्ष के शोक की अवधि के लिए बुलाया जाता है। उस समय के अंत में, शोक अवधि के अंत के प्रतीक के रूप में कब्र के सिर के पत्थर का अनावरण किया जाता है। लेकिन उसके पास जो भी बहाना हो, यीशु ने उससे कहा: मृतकों को अपने मृतकों को दफनाने दो, लेकिन तुम जाओ और राज्य की घोषणा करो परमेश्वर (मती ८:२२; लूका ९:६०)। वह बहुत धीमा था । उसने शिष्यत्व के दूसरे सिद्धांत का उल्लंघन किया, और प्रतिदिन उनका क्रूस उठाया (लूका ९:२३बी)।

चूंकि ये रीति-रिवाज टोरा की आवश्यकताएं नहीं थे, इसलिए वे लोग मसीहा का तुरंत पालन करने के लिए उनके व्यक्तिगत आह्वान पर रीति-रिवाज रख रहे होंगे। यह कहावत, मृतकों को अपने मृतकों को दफनाने दो, में “मृत” पर एक शब्द नाटक शामिल है। प्रभु की प्रतिक्रिया का वास्तव में मतलब है: जो लोग आध्यात्मिक रूप से मर चुके हैं उन्हें उन लोगों को दफनाने दें जो शारीरिक रूप से मर चुके हैं। इस वाक्य में आध्यात्मिक रूप से मृत वे लोग हैं जो यीशु का अनुसरण नहीं करते हैं (लूका १५:२४, ३२; यूहन्ना ५:२४-२५; रोमियों ६:१३; इफिसियों २:१ और ५:१४)। इससे पता चलता है कि जो लोग मसीह में जीवित हैं, उन्हें उनके राज्य को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बनानी चाहिए।

तीसरा, वफादारी का बंटवारा होना चाहिए. फिर भी दूसरे ने कहा: हे प्रभु, मैं तेरे पीछे चलूंगा; परन्तु पहले मुझे वापस जाने दो और अपने परिवार को अलविदा कहने दो (लूका ९:६१)। इस व्यक्ति का अनुरोध प्रथम राजा १९:१९-२१ में एलीशा के अनुरोध के समान था। हालाँकि एलिय्याह ने युवक का अनुरोध स्वीकार कर लिया, लेकिन येशुआ ने ऐसा नहीं किया। ईश्वर का राज्य आ गया है, और अच्छे चरवाहे का अनुसरण करने का आह्वान बाकी सभी चीज़ों पर प्राथमिकता रखता है। पुराने पारिवारिक रिश्ते इस बात का हिस्सा हैं कि किसी को उसका अनुसरण करने के लिए क्या छोड़ना चाहिए (लूका ५:११, २८)। यीशु ने उत्तर दिया: कोई भी व्यक्ति जो हल पर हाथ रखकर पीछे देखता है वह

परमेश्वर के राज्य में सेवा के लिए उपयुक्त नहीं है (लूका ९:६२) । इस व्यक्ति के परिवार के सदस्य उसे पूर्ण प्रतिबद्धता बनाने से रोक रहे थे। यह व्यक्ति अपने परिवार और मसीहा के बीच उचित चयन नहीं कर रहा था। उनकी आध्यात्मिक प्राथमिकताएँ क्रम से बाहर थीं। यदि आपका परिवार आपको उनके और ईसा मसीह के बीच चयन करने पर मजबूर कर रहा है, तो उन सभी संबंधों को तोड़ दें जो आपको रोकेंगे।

उद्धारकर्ता उन लोगों के बहानों को चुनौती देता है जिनकी प्रतिबद्धता कमज़ोर है। उन लोगों के बहाने जिन्होंने उसे पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया (लूका १४:१८-२०), उसने क्रोध के साथ जवाब दिया और अपना प्रस्ताव वापस ले लिया। वास्तव में, किसी भी तरह का बहाना मूर्खतापूर्ण लगता है, जैसे कि आजकल लोग जो बहाना अपनाते हैं, “मैं येशुआ में विश्वास नहीं कर सकता क्योंकि मैं यहूदी हूं” – लेकिन सभी शुरुआती विश्वासी यहूदी थे, साथ ही उसके बाद के कई लोग भी यहूदी थे। “मुझे बहुत कुछ छोड़ना होगा” – फिर भी जो हासिल किया जाना है उससे बहुत कम। “मैं अपने दोस्तों को खो दूंगा” – लेकिन स्वयं मसीहा ने कहा: मैं तुमसे सच कहता हूं, कोई भी जिसने मेरे और सुसमाचार के लिए घर या भाइयों या बहनों या माता या पिता या बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है वह सौ गुना पाने में असफल नहीं होगा इस वर्तमान युग में बहुत कुछ: घर, भाई, बहनें, माताएं, बच्चे और खेत – उत्पीड़न के साथ – और आने वाले युग में अनन्त जीवन (मरकुस १०:२९-३०)। लोग जितने भी बहाने खोजते हैं, बाइबल में उनके उत्तर हैं। . . लेकिन इसकी कोई गारंटी नहीं है कि लोग उन्हें स्वीकार करेंगे।